ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक- 14 अक्टूबर -II (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.00

ईश्वरीय ज्ञान एवं योग द्वारा भारत का नवनिर्माण - दादी

✶ योग स्वस्थ रहने का एक नायाब तरीका - मोदी

✶ देने की भावना ही सुख की कुंजी - शिवानी

✶ राजयोग एवं आध्यात्मिकता से समरसता, सद्भाव और भाईचारा - स्वामी चिदानन्द

प्रधानमंत्री का संदेश

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय विगत सात दशकों से मानवता की सेवा में तत्पर है और प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान भारत एवं विश्व के लोगों के बीच फैला रही है। इस संस्थान में समर्पित रूप से लाखों की संख्या में लोग ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी की संकल्पना को साकार कर रहे हैं। मैं इन्द्रा गांधी स्टेडियम में राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे इस प्राचीन राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत अभियान से बहुत प्रसन्न हूँ। योग स्वस्थ रहने का एक नायाब तरीका है। योग स्वस्थ एवं निरोगी रहने का एक पासपोर्ट है। मैं वैश्विक स्तर पर इस बात को देखकर बहुत प्रसन्न हूँ कि लोग योग की तरफ बड़े उमंग से आगे बढ़ रहे हैं। जीवन के हर पहलू में योग को शामिल कर रहे हैं। मैं हृदय से इस आयोजन के लिए संस्थान को बधाई देता हूँ और सफलता की कामना करता हूँ।

-श्री नरेन्द्र मोदी

दिल्ली। ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी 'स्वस्थ एवं सुखी भारत' विषय पर आयोजित महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए। साथ में मंचासीन हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. बृजमोहन, स्वामी चिदानन्द सरस्वती, सांसद मनोज तिवारी, ब्र.कु.अमीरचंद, ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य।

दिल्ली। ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि अतीत की बातें और व्यर्थ चिन्तन ही हमारी मानसिक शान्ति और आंतरिक शक्तियों को कमज़ोर करती हैं। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान एवं योग के आधार से जीवन में सुख, शान्ति, आंतरिक शक्ति, स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्राप्त करने का सभी से आह्वान किया। दादी ने राजयोग के सामूहिक अभ्यास द्वारा भारत को विश्व के लिए एक पथ प्रदर्शक बनाने का संकल्प दिया। विवेकानंद योग संस्थान के अध्यक्ष योगगुरू डॉ.एच.आर. नागेन्द्र ने कहा कि स्वास्थ्य का मतलब केवल शारीरिक स्वास्थ्य नहीं बल्कि मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य है। भौतिकता के ज्ञान भंडार से आगे जाकर प्राण, मन, बुद्धि, संस्कार, चेतनता, भगवान को वास्तविक रूप में जानकर मन पर नियंत्रण करने का नाम ही राजयोग है। मधुमेह नियंत्रण में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा हमें सहयोग मिला है और कैंसर नियंत्रण कार्यक्रम में भी सहयोग की अपेक्षा है। परमार्थ निकेतन आश्रम, हरिद्वार के स्थापक स्वामी चिदानन्द सरस्वती ने कहा कि भारत पुन:निर्माण अर्थ यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है और यह कार्य आठ दशक पूर्व ही ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना के साथ शुरू हो गया है। राजयोग एवं आध्यात्मिक ज्ञान से सबके जीवन में शान्ति, सद्भाव और भाईचारा आता है। सभी मीडिया चैनलों को ब्रेकिंग न्यूज़ की जगह इस सच्ची शान्ति के कुम्भ की मेकिंग न्यूज़ बनानी चाहिए क्योंकि यह प्रधानमंत्री का 'मेक इन इंडिया' सपना साकार करने का कार्य है। जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि स्वर्णिम भारत के निर्माण के लिए पवित्रता महत्वपूर्ण है तथा यह सुख एवं शान्ति की जननी है। यदि हर व्यक्ति यह प्रण करे कि मुझे सतयुग लाना है तो परमात्मा की शक्ति हर पल उनके साथ है। हम सभी के अंदर इतनी क्षमता है कि हम स्वयं के साथ दूसरों की बुराइयों को भी खत्म कर सकते हैं। हमारी सोच सिर्फ देने और देने के लिए ही होनी चाहिए तभी सच्चे सुख की प्राप्ति हो सकती है। ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य वक्ता ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि मानसिक स्वच्छता का आधार आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग का नियमित अभ्यास है। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि जब हमारे अंदर दिव्य गुण जागृत हो जायेंगे, सर्व के प्रति शुभ चिन्तन, व्यवहार में पवित्रता एवं सत्यता आ जायेगी तब यही भारत स्वर्ग बन जाएगा। इस अवसर पर दिल्ली के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद मनोज तिवारी ने दादियों का स्वागत किया व उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। अमेठी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. सल्वामूर्ति, योगगुरू एच.आर. नागेन्द्र, स्वामी चिदानंद सरस्वती आदि गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दादियों का सम्मान किया। भारत के विभिन्न राज्यों से आईं ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिकाओं ने जनसमूह को सामूहिक राजयोग का अभ्यास कराकर गहन शान्ति एवं आंतरिक शक्तियों का अनुभव कराया। जैसे कि शांति का सागर स्वयं इस धरा पर उतर आया हो। यह दृश्य देखते ही बनता था।

नई दिल्ली। 'स्वस्थ एवं सुखी भारत' विषय पर आयोजित महासम्मेलन के पश्चात् राजयोग में रुचि लेने वाले विशाल जनसमूह का अभिवादन स्वीकार करते हुए दादी जानकी एवं दादी रतनमोहिनी।